Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-348-352

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 348-352
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. आनंद कुमार कश्यप

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय,
मस्तूरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत.
वर्तमान पदस्थापना : विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी,
छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम
विभाग रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत.

Corresponding Author :

डॉ. आनंद कुमार कश्यप

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय,
मस्तूरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत.
वर्तमान पदस्थापना : विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी,
छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम
विभाग रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत.

भारतेंदु हरिश्चंद्र : साहित्य, समाज और नवजागरण

सारांश (ABSTRACT) : आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का समाज में बहुआयामी साहित्यिक और सामाजिक योगदान है। उन्होंने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली और सरल भाषा-शैली का प्रयोग कर हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। यह शोध-पत्र मुख्य रूप से उनके लिखित साहित्य में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों के सजीव चित्रण को रेखांकित करता है। लेख में इस बात पर बल दिया गया है कि जिस प्रकार सृष्टि के निर्माण में प्रकृति और पुरुष (शिव और शक्ति) दोनों अनिवार्य हैं उसी प्रकार समाज में नारी का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में, भारतेंदु जी के काव्य में नारी की स्थिति और उनकी समस्याओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। अपने पिता गोपालचंद्र जी की भांति भारतेंदु जी ने भी राष्ट्र-उत्थान को सर्वोपरि माना। उनके नाटक 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' में धर्म के नाम पर फैले पाखंड, अनाचार और झूठी प्रशंसा पर तीखा व्यंग्य किया गया है। उनकी प्रखर देशभक्ति और निर्भीक विचारों के कारण तत्कालीन सरकार उन पर कुपित रही और उनके कार्यों को बाधित करने का प्रयास किया। इसके बावजूद उन्होंने अपनी मौलिक और अनूदित रचनाओं के माध्यम से निरंतर भारतीय जनमानस को जागरूक किया और समाज में नवजागरण की चेतना का सफलतापूर्वक संचार किया। भारतेंदु जी की लोकप्रियता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने 1880 में उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि प्रदान की थी।

प्रमुख शब्द (Keywords) : भारतेंदु हरिश्चंद्र, आधुनिक हिंदी साहित्य, नवजागरण, नारी चेतना, राष्ट्र-उत्थान।

प्रस्तावना : भारतेंदु हरिश्चंद्र जी को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक और नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। उनका जन्म वाराणसी के धनी और प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में 9 सितंबर 1850 को हुआ था। केवल 5 वर्ष की आयु में उनकी माता और 10 वर्ष की आयु में उनके पिता के निधन के कारण उनका बाल्यकाल संघर्षपूर्ण रहा। उनके पिता गोपाल चंद्र की कविता 'गिरधरदास' क्षेत्रीय स्तर पर चर्चित थी। अतएव भारतेंदु जी को

साहित्यिक संस्कार विरासत में मिले। उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी का अध्ययन किया। आगे उन्होंने स्वाध्याय से मराठी, बांग्ला और पंजाबी जैसी भाषाएं सीखीं। 34 वर्ष 4 माह की अल्पायु में 6 जनवरी 1885 इनकी मृत्यु बनारस में हुई। भारतेंदु जी ने हिंदी साहित्य की विधाओं, जैसे नाटक, कविता, निबंध, पत्रकारिता, में विशाल और युगांतरकारी कार्य किया जिसके कारण हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी का जीवन कालखंड (1850-1885 तक) भारतेंदु युग के रूप में प्रचलित है। भारतेंदु युग को 'हिंदी नवजागरण का काल' भी कहा जाता है जिसमें देशभक्ति, सामाजिक सुधार, हास्य-व्यंग्य और खड़ी बोली गद्य का विकास प्रमुख प्रवृत्तियां थीं। इस युग ने रीतिकाल की श्रृंगारिकता से हटकर राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना को साहित्य का केंद्र बनाया।

हिंदी नवजागरण में भारतेंदु जी की भूमिका : डॉ. रामविलास शर्मा जी के अनुसार, भारतेंदु जी ने हिंदी नवजागरण का सूत्रपात किया। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतीय समाज में जो राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना जाग्रत हुई, उसे भारतेंदु ने अपने साहित्य का विषय बनाया। उन्होंने मध्यकालीन सामंती, पारलौकिक और दरबारी साहित्य की परंपरा को तोड़कर साहित्य को लौकिक जीवन, बुद्धिवाद, मानवतावाद और सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, छुआछूत और अंधविश्वासों पर अपने लेखन से गहरा आघात किया। भारतेंदु ने 1857 के विद्रोह को मात्र सिपाही विद्रोह मानने वाले अंग्रेजी और सुधारवादी नजरिए का खंडन किया और अपनी रचनाओं में ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के नग्न रूप को निर्ममता से उजागर कर उन्मुलित किया। उन्होंने भारतवासियों से स्वार्थपरता त्यागकर एकता स्थापित करने का अनुरोध किया।

भाषा और गद्य का विकास : भारतेंदु जी से पूर्व हिंदी गद्य की भाषा का कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं था। उन्होंने राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' की अरबी-फारसी प्रधान भाषा और राजा लक्ष्मण सिंह की अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ भाषा के बीच का मध्यमार्ग अपनाया।

- **खड़ी बोली का प्रयोग :** भारतेंदु जी ने खड़ी बोली को साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया । उन्होंने तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग कर अपने लेखन की भाषा को पाठकों के लिए सहज, सजीव और सर्वमान्य स्वरूप प्रदान किया।
- **हिंदी और उर्दू का समागम :** भारतेंदु जी हिंदी और उर्दू को बुनियादी रूप से एक ही भाषा मानते थे । उनका मानना था कि शुद्ध देवनागरी लिपि हिंदी के रुप मे परिभाषित की जाती है। भारत में सामान्य बोलचाल की भाषा में हिंदी, उर्दू और फ़ारसी शब्दों को समरूप में प्रयोग किया जाता है अतः हिंदी और उर्दू का समागम पाठकों के लिए सहज होता है।
- **निज भाषा प्रेम :** भारतेंदु जी का स्पष्ट मानना था कि कोई भी जाति सिर्फ अपनी भाषा के माध्यम से ही प्रगति कर सकती है । उनका प्रसिद्ध कथन है- "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल"।

नाट्य साहित्य और रंगमंच में भारतेंदु जी का योगदान : नाटक भारतेंदु जी की सर्वाधिक प्रिय विधा रही है। उन्होंने नाटकों की रचना के साथ ही रंगमंच के विकास में भी योगदान दिया और पारसी नाटकों की अस्वाभाविक व अशिष्ट अभिनय शैली का कड़ा विरोध किया। उनके प्रमुख मौलिक और अनुवादित नाटक इस प्रकार हैं:

भारतेंदु जी के मौलिक नाटक:

- **वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873) :** यह एक प्रहसन है जिसमें धर्म और उपासना के नाम पर समाज में फैले पाखंड और अनाचारों पर भारतेंदु जी ने करारा व्यंग्य किया गया है।
- **विषस्य विषमौषधम् (1875) :** यह 'भाण (प्रहसन)' शैली में लिखा गया मौलिक नाटक है जिसमें देशी राजाओं (विशेषकर बड़ोदरा के इतिहास) पर व्यंग्य है जो अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बने हुए थे। इसमें अंग्रेजों की शोषण नीति, भ्रष्टाचार और राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण है।

- **प्रेमजोगिनी (1875) :** इसके चार अंक है जिनमें काशी के तीर्थस्थानों पर व्याप्त सामाजिक आडंबरों और कुरीतियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रथम संस्करण "हरश्चिंद्र चंद्रिका" 1874 में प्रकाशित हुआ था।
- **सत्य हरिश्चंद्र (1875) :** यह नाटक राजा हरिश्चंद्र जी की सत्यप्रियता और भारतीयता के उदात्त स्वरूप को दर्शाता है।
- **श्री चंद्रावली (1876) :** इस नाटिका में कृष्ण और चंद्रावली (राधा) के प्रेम को आधार बनाकर आदर्श प्रेम को भारतेंदु जी ने दर्शाया है।
- **भारत दुर्दशा (1880) :** इस नाट्यरासक में भारतेंदु जी के देशभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण है जिसमें वर्ण-वैषम्य, दरिद्रता, आलस्य, महंगाई और ब्रिटिश राज के कारण भारत की दुर्दशा का सजीव चित्रण है। यह नाट्य 6 अंकों में विभाजित है।
- **नीलदेवी (1881) :** यह गीतिरुपक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें भारतीय नारी शक्ति, साहस और देशभक्ति दर्शित है। इसमें पंजाब की नीलदेवी नामक महिला के चरित्र के माध्यम से भारतीय नारी के निर्भीक और ओजस्वी रूप को चित्रित किया गया है। इसमें नारीयों की हीन भावना को दूर कर उन्हें अपने स्वत्व और वीरता का एहसास कराने का प्रयास किया गया है।
- **अंधेर नगरी (1881) :** हास्य और व्यंग्य शैली में रचित इस नाटक में भारतेंदु जी ने तत्कालीन राजाओं की अंधेरगर्दी, अराजकता और मूर्खतापूर्ण शासन व्यवस्था पर तीखा प्रहार है ।

भारतेंदु जी के अनुवादित नाटक : भारतेंदु जी ने 'विद्यासुंदर' (बांग्ला से), 'मुद्राराक्षस' (विशाखदत्त कृत संस्कृत से), 'दुर्लभ बंधु' (शेक्सपियर के मर्चेंट ऑफ वेनिस का भारतीयकरण), 'कर्पूर मंजरी', और 'पाखंड विडंबन' जैसे नाटकों का सफल अनुवाद कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया ।

भारतेंदु जी की प्रखर पत्रकारिता और निबंध लेखन : भारतेंदु जी निर्भीक और जागरूक पत्रकार थे जिन्होंने पत्रकारिता को समाज सुधार के हथियार के रूप में बख़ूबी उपयोग कर पत्रकारिता को सुशोभित किया।

- **कविवचन सुधा (1868) :** इस पत्रिका का संपादन भारतेंदु जी ने किया जिसका उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित करना और समाज में जागरूकता फैलाना था। यह हिंदी पत्रकारिता में एक क्रांतिकारी घटना थी । इसमें साहित्य के साथ-साथ राजनीति, धर्म और समाज नीति पर भी लेख छपते थे। भारतेंदु जी की आलोचनात्मक टिप्पणियों से ब्रिटिश अधिकारी इतने घबराते थे कि मजिस्ट्रेट ने शिक्षा विभाग के लिए इस पत्रिका को लेना बंद करवा दिया था ।
- **हरिश्चंद्र चंद्रिका (1873) :** भारतेंदु जी ने काशी से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नाम की मासिक पत्रिका शुरु की जिसे बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' के नाम से प्रसिद्धि मिली। यह पत्रिका आधुनिक हिंदी गद्य के विकास, साहित्य और देशभक्ति के प्रसार में ऐतिहासिक मील का पत्थर रही। इसी पत्रिका के माध्यम से भारतेंदु ने हिंदी गद्य के परिष्कृत और सुधरे हुए रूप को सामने रखा ।
- **बालाबोधिनी (1874) :** भारतेंदु जी की इस पत्रिका का उद्देश्य स्त्री-शिक्षा और महिला सशक्तिकरण था।

भारतेंदु जी के निबंध : भारतेंदु जी को हिंदी निबंध का जनक भी माना जाता है । "भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?" निबंध में भारतेंदु जी ने कुरीतियों को त्यागने, आत्मनिर्भर बनने और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की प्रेरणा है । इसके अलावा "दिल्ली दरबार दर्पण", "स्वर्ग में विचारसभा", और "भ्रूण हत्या" जैसे निबंधों के माध्यम से भारतेंदु जी ने गहरी सामाजिक चेतना जगाई।

भारतेंदु जी के काव्य साहित्य : भारतेंदु जी ने लगभग 70 से अधिक काव्य ग्रंथों की रचना की जिसमे कविताएं विविध विषयों को समेटे हुए हैं जो निम्नानुसार है:

- **भक्ति और श्रृंगार :** सूरदास जी और बिहारी जी को अपना आदर्श मानते हुए भारतेंदु जी ने राधा-कृष्ण प्रेम, ईश्वर गुणगान और प्रकृति सौंदर्य पर "भक्तसर्वस्व", "प्रेम मालिका", "प्रेम सरोवर" और "प्रेम तरंग" जैसी रचनाएं लिखीं ।
- **राष्ट्रभक्ति और राजनीतिक चेतना :** भारतेंदु जी के काव्य में देश की दुर्दशा पर शोक और पराधीनता के प्रति आक्रोश स्पष्ट दिखता है । उनकी कविता "विजय वल्लरी" और "विजयनी विजय वैजयन्ती" में भारतीय सैनिकों की वीरता का गुणगान है । उन्होंने अंग्रेजों की आर्थिक लूट (ड्रेन ऑफ वेल्थ) को अपने साहित्य में बेहद चतुराई से दर्शाया, उदाहृनार्थ "भीतर-भीतर सब रस चुसै। हँसि-हँसि के तन मन धन मूसै" ।

भारतेंदु जी द्वारा स्त्री विमर्श : भारतेंदु जी के कालखंड में समाज पितृसत्तात्मक थी जहाँ नारी का जीवन उसके शरीर और घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता था। साथ ही उस कालखंड में युद्ध के दौरान जीत में संपत्ति के साथ महिलाओं को भी दास के रूप में जीते गए राजा या उनके करीबी राजदारों को प्राप्त होता था। ग्रंथों और धर्म के नाम पर उनकी स्वतंत्रता को कुचलने के व्यापक प्रयास किये जाते थे।

भारतेंदु जी ने इस रुढ़िवादी विचारधारा का कड़ा विरोध किया। उन्होंने लिखा था "जो नारी सोई पुरुष यामैं कछु न विभक्ति", उक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि वे नारी को पुरुष वर्ग के समान अधिकार देने के प्रबल समर्थक थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी के प्रभाव में आकर उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया और वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873)' नामक प्रहसन (व्यंग्य नाटक) में भारतेंदु जी ने इसके पक्ष में तर्क दिए। उन्होंने अपनी रचनाओं (जैसे 'नीलदेवी' की भूमिका) में स्त्रियों से प्रेरणा दी कि वे अपनी दासता से मुक्त हों, शिक्षित हों और अपने स्व-ज्ञान को भारतेंदु जी ने नारी उत्थान के साथ-साथ उनके राष्ट्र निर्माण एवं समाज के उत्थान में योगदान को पोषित करने का प्रयास किया। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या को समाज का सबसे बड़ा कलंक एवं महापाप माना।

निष्कर्ष : भारतेंदु जी श्रेष्ठ साहित्यकार, महान समाज सुधारक और युगद्दष्टा थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को सामंती दरबारों से निकालकर आम जनता, उसकी पीड़ा और उसके संघर्षों के बीच खड़ा किया। साहित्य, पत्रकारिता और रंगमंच के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में नवजागरण का शंखनाद किया। उनके नवजागरण का प्रभाव उनके समकालीन साहित्यकारों से लेकर भविष्य की पीढ़ियों तक दिखाई देता है । यही कारण है कि उनके रचनाकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास में अत्यंत सम्मान के साथ 'भारतेंदु युग' कहा जाता है।

संदर्भग्रन्थ :

1. शंभुनाथ (2009). भारतेंदु और भारतीय नवजागरण, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली ।
2. पाण्डेय, मै. (2000). साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
3. शुक्ल, रा. (2009). हिंदी-साहित्य का इतिहास, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।
4. नगेन्द्र एवं हरदयाल (2009). हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नोएडा ।
5. टंडन, पू. (2012). हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली ।
6. गोस्वाममी, कृ. कु. (2008). अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
7. कुमार, अ. (2014). भारतेंदु हरिश्चंद्र: आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक, हिंदी साहित्य प्रकाशन, वाराणसी ।
8. शर्मा, एस. (2016). भारतेंदु और समाज सुधार, राष्ट्रीय साहित्य संस्थान, दिल्ली ।
9. मिश्रा, आर. (2015). हिंदी साहित्य में नवजागरण, साहित्य अकादमी, मुंबई ।
10. गुप्ता, पी. (2017). समाज और साहित्य: भारतेंदु का योगदान, साहित्यिक अध्ययन केंद्र, कोलकाता ।
11. जैन, एम. (2013). भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक, साहित्य भवन, लखनऊ ।

12. तिवारी, के. (2012). भारतेंदु का साहित्यिक विश्लेषण, साहित्य विकास प्रकाशन, पटना ।
13. तिवारी, उ. (2000). आधुनिक गीतिकाव्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
14. **कुमारी, सी.** (2017). नाट्यकलाओं में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एंड साइंस (CASIRJ), 8*(2) ।
15. **दुआरा, जे., और द्विवेदी, जी.** (2019). भारतेन्दु हरिश्चंद्र के काव्य में नारी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन इकोनॉमिक्स एंड सोशल साइंसेज (IJRESS)*, 9(5). http://euroasiapub.org ।
16. **पाण्डेय, आर.** (2014). हिन्दी नवजागरण और भारतेंदु हरिश्चंद्र. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस, इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 3*(7) ।
17. **साहू, वाई. के., और साहू, डी.** (2018). भारतेंदु हरिश्चंद्र की साहित्यिक धारा और उनके योगदान. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड स्पेशल एजुकेशन (INT-JECSE)*, 10(2). https://doi.org/10.48047/intjecse/V10I2.76।
18. **हिंदी विभाग** (2021). *डिजिटल भित्ति पत्रिका: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* (अंक 2021-22), रानीगंज गर्ल्स कॉलेज ।

•